आरोही श्रीवास्तव

जन्मस्थान- जबलपुर (म.प्र)
प्रकाशन- उड़ने को आकाश तो दो (कविता संकलन)
सम्पादन- अखण्ड भारत पत्रिका
सम्मान- तारू दत्ता पुरस्कार (AIPC)
सम्प्रति- टैक्स कंसलटेंट

क्या असीमित प्रेम घोंटे, मौन धरना, न्याय होगा?

जब किसी के नयन निश्छल
यह उरस्थल सींचते हों,
जब किसी के शब्द-सागर
शान्त हो कर खींचते हों,
उठ रहे हों जब समर्पित, बुलबुले हिय में मचल कर,
कण्टकों से तब उन्हें निष्प्राण करना, न्याय होगा?

एक क्षण भी बन्धनों का
जब नहीं आभास हो तब,
इन्द्रियों पर हर विषमता
दूर कर विश्वास हो तब,
जब पगों पर छूटता हो, स्वयं का अधिकार सम्भव,
सत्य पर तब छल स्वरूपी आग भरना, न्याय होगा?

वायु के सम उड़ रहे जो
तोड़ पिंजरे पङ्ख खोले,
चेतना से मुक्त हो कर
दृष्टि में नव रङ्ग घोले,
ध्येय जिनका हो न किंचित्, इस जगत को कष्ट देना,
विवश हो कर उन खगों के पर कुतरना, न्याय होगा?

जब किसी की देव मूरत
दृष्टि में घर कर रही हो,
रिक्तता खण्डित भवन की
जप-क्रिया से भर रही हो,
पुष्प, चन्दन, धूप, दीपक, दिव्य तन-मन दीप्त हो जब,
प्रार्थना में मुग्ध मन का नित्य मरना, न्याय होगा?

अश्रुजल

स्पर्श की आस में दो प्रतिक्षित अधर
भाग्य के द्वार पर कर रहे प्रार्थना

देह ढलने लगी चिर-प्रतीक्षा लिए
कान्ति भी चक्षुओं से उतरने लगी
हाथ की रेख पर अश्रुजल को धरे
उँगलियों से विरह गीत गढ़ने लगी
टीस मन को मरोड़े रही किन्तु मैं
मुग्ध करती रही प्रेम की साधना

एक आभास हिय को डराता रहा
क्या मिलन-योग क्षण भर सुनिश्चित नहीं
प्रेम आता रहा प्रेम जाता रहा
विश्व के ज्ञान में कुछ व्यवस्थित नहीं
श्वेत आभा लिए मारती हर घड़ी
मैं बिना सार उठती हुई भावना

कौन आहट किए जा रहा हर प्रहर
बिम्ब आकार में हाय ढलता नहीं
रात्रि की ओट में स्वप्न सोए हुए
स्वप्न में चाँद कोई निकलता नहीं
भूल कर हर व्यथा साज श्रृङ्गार कर
प्राण के साथ घुलती रही कामना

मौन अङ्कुश कसे पग ठहरने लगे
नीति के चक्र में सब सिमटता गया
एक अध्याय खण्डित न पूरा हुआ
प्रीति के पृष्ठ से पूर्ण मिटता गया
आँख को मूँद कर ध्यान में खो गई
भाल पर आप लिखती गयी याचना

ISSN:2583-8849